प्रकृति, पारिस्थितिकी और समकालीन हिंदी कविता

- ध्रुव कुमार

आधुनिक हिंदी कविता के इतिहास में समकालीन कविता विषय की नवीनता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. इस काल की हिंदी कविता में आम आदमी की अंतरानुभूतियों का चित्रण, स्वाधीनता संबंधी नई अभिव्यक्ति, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठे आंदोलनों का प्रभाव, स्त्री, दलित तथा आदिवासी समुदाय के प्रति नए दृष्टिकोण का चित्रण हुआ है. इन्हीं विषयों में पारिस्थितिकीय संवेदना भी एक प्रमुख विषय बनकर हमारे सामने आया। समकालीन रचनाकार साहित्य की पारंपरिक परिधि में न रहकर साहित्येतर अनुभूतियों को भी अपने लेखन का विषय बनाना शुरू करते हैं। यह सच भी है कि साहित्य की कोई निश्चित सीमा नहीं है। वह सर्वत्र है। इस संबंध में प्रसिद्ध आलोचक और चिंतक डॉ. रोहिणी अग्रवाल लिखती हैं, 'साहित्य चूँकि समय और समाज के साथ चलते हुए उन्नत भविष्य के सृजन का दूसरा नाम है। अतः जीवन और जगत की कोई भी समस्या/विडंबना उसकी विषय परिधि से बाहर नहीं। दरअसल ब्रह्मांड में जो कुछ भी अस्तित्ववान है, वह मनुष्य की संवेदना, चिंता और चिंतन का विषय है और प्रकारांतर से साहित्य का भी।'[1] इस प्रकार पर्यावरणीय विकृतियों से आहत कवि मन ने पारंपरिक प्रकृति चित्रण से भिन्न प्रकृति के विनाश पर अपनी चिंता जाहिर करते हुए कविताएँ करनी शुरू की। कविता में पारिस्थितिकी चिंतन की धारा में आठवें और नवें दशक आरंभिक चरण में रखे जा सकते हैं। वैसे तो हमारी पूरी ज्ञान परंपरा, साहित्य और संस्कृति प्रकृति के सानिध्य में ही उद्भूत हुई है तथापि प्रकृति के विनाश की चिंता आधुनिक युग में उत्पन्न होने के कारण समकालीन साहित्य में चेतावनी के रुप में उपस्थित है।

मानव ही नहीं अपितु सृष्टि के समस्त जीव जंतुओं का समग्र परिवेश पारिस्थितिकी से ही विकसित तथा प्रभावित होता रहा है। इतिहास हमें बताता है कि प्रत्येक मानवीय सभ्यता प्रकृति की गोद में ही जन्मी, फली-फूली है और अंततः उसी में समा गई है। सिंधु घाटी की सभ्यता हो अथवा मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यता, सभी नदियों से प्रारंभ होकर नदियों में विलीन हुईं। इस प्रकार यह निर्विवाद सत्य है कि सृष्टि के समस्त प्राणियों एवं उनके क्रियाकलापों का नियामक प्रकृति ही रही है। पारिस्थितिकी तथा समाजशास्त्र मानवशास्त्र का अध्ययन करने पर एक निष्कर्ष सामने आता है कि मानव के पारस्परिक, पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों का आधार पर्यावरण ही है अर्थात इन संबंधों को निर्धारित करने में पर्यावरण की केंद्रीय भूमिका होती है। जैव-विविधता, मानव की उत्पत्ति, सभ्यता की निर्मिति, धर्म, जाति, साहित्य, संगीत, कला और संस्कृति, युद्ध और शांति आदि प्रत्येक क्रियाकलापों का कारण प्रकृति ही रही है।

वर्तमान युग विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इसके जरिये मनुष्य असंभव को भी संभव बनाने का दंभ भर रहा है। नई-नई तकनीकों से जहाँ एक ओर वह सृजन की अपार क्षमता का स्वामित्व ग्रहण कर रहा है, वहीं तरह-तरह के विनाशकारी अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण से उसने समूची मानव जाति को विनाश के मुहाने पर लाकर खड़ा कर दिया है। पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। विकास के रोज नए-नए बनते लक्ष्यों तक पहुँचने की जद ने मनुष्य और प्रकृति को भी आमने-सामने लाकर खड़ा कर दिया